1

एक ज़रा सी तवज्जोह

वसीम सिद्दीकी

रश्मि ने सूरज को जल्दी जल्दी स्कूल के लिए तय्यार किया। उसे रोज छः बजे सुबह टिल्लू के चाय के होटल के पास पहुंचना होता था। सूरज के स्कूल की बस वहाँ सवा छः साढ़े छः के बीच में आ जाती थी आस पास के रहने वाले कुछ बच्चे वहीं आ जाते थे और वहीं से स्कूल की बस पर सवार होते थे। क्योंकि बस बच्चों के घरों तक नहीं जाती थी उनके पिक एण्ड ड्राप प्वाइंट्स थे। सूरज की उमर पाँच साल थी और उसका दाखिला (admission) इसी साल इस स्कूल में हुआ था। रश्मि सूरज को लेकर टिल्लू के होटल के पास पहुंच गयी थी। जाड़ों का मौसम था और काफ़ी ठण्ड भी पड़ रही थी और हमेशा की तरह वह छोटा बच्चा जो होटल में काम करता था भागता हुआ वहीं आ गया। और पाँच दस मिनट जब तक स्कूल की बस नहीं आ जाती वह वहीं सूरज के पास रहता। वह सूरज की ही उमर का लगता था सूरज भी उसको देखकर बहुत खुश होता था। रश्मि ने देखा कि कभी कभी वह दोनो गले भी मिलते थे। सूरज कभी उसे अपनी किताबें भी दिखाता था उसमें खूबसूरत तस्वीरें बनी होती थीं। वह बच्चा इन तस्वीरों को देखकर बहुत खुश होता था जब तक बस नहीं आती वह बच्चा सूरज के साथ खेलता रहता था रश्मि को उस बच्चे का सूरज के साथ खेलना बुरा नहीं लगता था। वह बच्चा उसे बहुत ज़हीन नजर आता था सूरज से साथ खेल खेल में इंग्लिश के काफ़ी वर्डस सीख गया था। सूरज को उसे बैग से किताबें निकालकर

दिखाना अच्छा लगता था और बच्चा भी ऐसा लगता था कि इन किताबों में क्या क्या है वह सब देख ले और समझ ले। क्योंकि वह काफ़ी सुबह का वक्त होता इसीलिए उस वक्त होटल में कोई ग्राहक वगैरा नहीं होते थे वह होटल वाला होटल का चूल्हा वगैरा जलाने में मशगूल रहता था। और वह बच्चा होटल की बेंच और टूटी हुई मेज कपड़ा रगड़ रगड़ कर साफ़ करता था फिर मौका मिलते ही सूरज के पास आ जाता था। कभी कभी अगर एक दो ग्राहक इत्तेफ़ाक से उस वक्त आ गए तो वो वहीं से चिल्ला कर बच्चे को बुलाता था। और महमूद जल्दी आ और वो बच्चा धीरे कदमों से होटल वापस चला जाता था। रश्मी अकसर उस बच्चे के बारे में सोचती थी कि सुबह सब बच्चे यूनिफ़ार्म पहनकर और स्कूल बैग टांगकर स्कूल जाते हैं और ये बच्चा उस वक्त होटल में मुलाज़मत कर रहा है और होटल की चाय की प्यालियाँ धो रहा है। कितना ज़हीन है वो बच्चा सिर्फ़ सूरज के साथ खेल खेल में अच्छा खासा सीख गया है। कैसी हसरत भरी निगाहों से वह सूरज के स्कूल के यूनिफ़ार्म और स्कूल बैग को देखता है। कभी उसे छू रहा है और कभी बैग के अन्दर झांक कर किताबों को देख रहा है।

आज रश्मी सूरज को लेकर टिल्लू के होटल के पास आयी तो वो बच्चा वहां नहीं आया। उसने दूर से टिल्लू के होटल में देखने ~~[illegible]~~ की कोशिश की लेकिन वो उसे नहीं नज़र आया। सूरज की भी नज़र बार बार उस होटल पर पड़ रही थी लेकिन वो बच्चा कहीं नज़र

नहीं आया। स्कूल बस आ गयी सूरज बस में दाखिल
हो गया और बस जा चुकी थी। रश्मी अब
फिर टिल्लू के होटल की तरफ देख रही थी
कहलाता तो टिल्लू का होटल था लेकिन
वो सिर्फ बहुत मामूली छोटा सा ढाबा था
जहां सिर्फ चाय और बिस्कुट मिलता था।
टेबल की टूटी फूटी मेज भी हिलती रहती थी
और बेंच भी ढीली हो रही थी अगर गाहक
सम्भल कर चाय ना पिये तो वो छलक कर
ऊपर गिर जाए। रश्मी अब टिल्लू के होटल
की तरफ जा रही थी होटल के मालिक का
नाम टिल्लू था और वो होटल उसी के नाम से मशहूर
था। आज महमूद नहीं नजर आ रहा है जो
तुम्हारे यहां काम करता है। टिल्लू ने रश्मी
को हाथ उठा कर सलाम किया था। नहीं ~~बेगम~~
मैडम ~~साहिबा~~ वो मेरा बेटा है। आज उसे बुखार आ
गया इस लिए घर पर ही है। और कैसे
बुखार आ गया रश्मी को तशवीश हुई। कुछ
नहीं ~~बेगम~~ मैडम ~~साहिबा~~ बस ऐसे लग गयी थी।
उसे याद आ गया कि सुबह के वक्त भी
वह सिर्फ कमीज़ ही पहने रहता था। उसे किसी
डाक्टर को दिखवाया कुछ दवा वगैरा दी। टिल्लू
के पास रश्मी के सवालो का कोई जवाब नहीं
था। उसने हिचकिचाते हुए कहा बेगम साहिबा
उसे अस्पताल ले जाते तो सारा दिन उसी
में लग जाता और फिर ये होटल कैसे खुलता।
और तो तुम्हारी बीवी उसे अस्पताल ले जा
सकती थी वो कहां है। वह नहीं रही एक लम्बी बीमारी
के बाद वो मर गयी थी। रश्मी ओह
कह कर रह गयी। कैसी बीमारी थी उसने
पूछा। डाक्टर लोग बताते थे कि कोई तरह
का कैंसर था। तो महमूद बुखार की हालत

मै घर में अकेला है। हां बेगम साहिबा। तुम जाकर उसे घर से लेकर आओ मैं उसे डाक्टर को दिखाऊंगी। होटल थोड़ी देर के लिए बन्द कर दोगे तो कोई हर्ज नहीं है। जब तक तुम आओ मैं घर से होकर आती हूं। पास में जो डाक्टर का क्लीनिक वो थोड़ी देर में खुल जाएगा। जी बेगम साहिबा टिल्लू ने जवाब दिया। उसने सोचा महमूद को डाक्टर पाण्डे को दिखा देगी एक तरह से डाक्टर पाण्डे उन लोगो के दोस्त थे और फैमली डाक्टर भी। रशमी घर आ गयी थी। आज तुम्हे थोड़ी देर हो गयी क्या बस देर में आयी। नही बस आ गयी थी फिर उसने महमूद की तबियत खराब होने की इत्तला दी। और बताया कि वो उसे डाक्टर पाण्डे को दिखाना चाहती है। विजय कुछ नही बोला वो जानता था कि उसकी बीबी बहुत नरम दिल है और वो भी जब मामला एक बच्चे का हो और जिसका सूरज से भी ताल्लुक हो। क्योंकि महमूद इस घर का जाना पहचाना नाम था। सूरज की मुलाकात महमूद से हफ्ते में पांच दिन होती थी। सिर्फ पांच या दस मिनट के लिए। ~~होती थी~~ लेकिन उसके घर में महमूद जिकर बहुत होता था बहुत अच्छा बच्चा है जहीन है सूरज उससे मिलकर बहुत खुश होता है। कैसे दिखाने जाओगी मैं तो आज दफ्तर से थोड़ी देर के लिए भी नही निकल सकता तुम्हे तो पता है कि आजकल आडिट टीम आयी है आडिट चल रहा है। नही तुम दफ्तर जाओ मैं उसको लेकर खुशी से चली जाऊंगी। विजय दफ्तर चला गया। थोड़ी देर में रशमी टिल्लू के होटल

की तरफ चल दी थी। टिल्लू महमूद को लेकर आ गया था। रश्मी ने महमूद का माथा छुआ जो बुखार से जल रहा था। वो उसे स्कूटी पर लेकर डाक्टर पांडे के क्लीनिक चल दी थी। महमूद बुखार की वजह चल नहीं पा रहा था। डाक्टर पांडे एक छोटे से बच्चे को रश्मी साथ देखकर हैरान हुए। यह बच्चा सूरज का दोस्त है। रश्मी ने कहा। डाक्टर पांडे ने महमूद को अच्छी तरह मुआइना किया। उनके चेहरे पर तश्वीश के आसार नज़र आ रहे थे। महमूद की गर्दन थोड़ी सी टेढ़ी हो रही थी। इसको पोलियो के ड्राप्स दिए गए थे। रश्मी से पूछ रहे थे। रश्मी ने कहा की उसको पता नहीं लेकिन उसके बाप से पूछ कर बता देगी। डाक्टर पांडे ने कहा मुझे इसपर पोलियो का हल्का सा असर लग रहा है। कुछ टेस्ट मैं करवा रहा हूँ। उससे इस बात का पता चल जाएगा

जब रश्मी ने टिल्लू से पोलियो के ड्राप्स के बारे में पूछा तो टिल्लू का जवाब सुनकर वो हैरत में पड़ गयी। टिल्लू ने बताया कि उसके मोहल्ले के मौलवी साहब ने सारे मुहल्लेवालों को पोलियो के ड्राप्स लेने से मना कर दिया था। एक दो बार तो पोलियो की टीम उनके मुहल्ले में आयी थी उसके मुहल्ले वालों ने उन लोगों को वहां से खदेड़ कर भगा दिया था। महमूद के टेस्ट के रिजल्ट्स आ गए थे। उसपर पोलियो का हल्का सा असर था। बरवक्त कार्रवाई और दवाओं से उसके पोलियो का इलाज हो गया था। रश्मी टिल्लू से पूछ रही थी कि आखिर तुम कैसे

बाप हो। तुम्हारा बच्चा इतना ज़हीन है और तुम उसे पढ़ाने के लिए राज़ी नही हो। कहते हो इसको रवाली साइकिल का पन्क्चर बनाना है इसके लिए पढ़ाई की क्या जरूरत है। पोलियो वालो की टीम को ही मुहल्ले से भगा दिया। टिल्लू कुछ शर्मिंदा से नज़र आ रहे थे। रशमी के बरवक्त तवज्जो से वो पोलियो का शिकार होने से बच गया था।

सूरज के स्कूल मे दसहेरे की छुट्टियों थी स्कूल दस दिनो के लिए बन्द था। छुट्टियो के बाद जब रशीम सूरज को लेकर बस पर छोड़ने के लिए सुबह होटल के पास आयी तो महमूद कपड़ा लिए होटल के कुर्सी मेज साफ कर रहा था। सूरज को देरवकार वो हमेशा की तरह वहॉ आ गया अबकी उसने सूरज से कहा कि वो अपना स्कूल बैग उसे पकड़ा दे। सूरज ने उसे अपना स्कूल का बैग पकड़ा दिया था। और महमूद ने बिलकुल सूरज के ही अन्दाज़ मे बैग को कन्धे पर लटका लिया। और उसवक्त उसके चेहरे पर अजीब तरह की चमक आगयी जैसे वो अब खुद बस्ता लटकाए अपने स्कूल की बस का इन्तज़ार कर रहा है। बस सूरज को ले कर चली गयी थी अबको महमूद बड़ी देर तक बस की तरफ हाथ हिलाता रहा। रशमी ये सब देरव रही थी। उसके चेहरे पर एक अजीब उदासी सी फैल गयी थी। महमूद भागकर अपने होटल की तरफ चला गया था। वो भी उसके पीछे पीछे वहॉ आ गयी थी।

टिल्लू ने हाथ उठाकर रशमी को सलाम किया था। देखो तुम्हारा बेटा बहुत ज़हीन है और उसे पढ़ने का शौक भी तुम इसे रोज थोड़ी देर के लिए मेरे घर भेज दिया करो मै इसे पढ़ा दिया करूंगी। उसके बाद उसका आस पास के किसी

स्कूल मे दाखिला भी करवा दूंगी। यह बच्चा पंक्चर बनाने के लिए नही पैदा हुआ है। रश्मि ने टिल्लू को एक बार फिर समझाने की कोशिश की। आखिर टिल्लू ने हाथ जोड़कर अपनी बत्तीसी बाहर निकाली दी थी। मतलब वो महमूद को पढ़ाने के लिए राजी हो गया था।

अब महमूद बाकायदगी से रश्मी के पास पढ़ने जाने लगा। रश्मी ने उसके लिए कुछ किताबे खरीद दी थी और एक स्कूल बैग भी। जिसे वो बड़ी शान से लटकाकर अपने होटल से रश्मी घर जाता था। ऐसे जैसे वो रश्मी के घर नही अपने स्कूल जा रहा हो। गर्मियों की छुट्टियां शुरु हो गयी थी। महमूद छुट्टियों मे भी रश्मी के घर पढ़ने जाता था। पढ़ाई के साथ साथ वो सूरज के साथ खेलता भी था। सूरज उसका अच्छा खासा दोस्त बन गया था। छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुल गए तो रश्मी ने महमूद को दाखिला पास ही के पराइमरी स्कूल मे करवा दिया था।

— × —

आज विजय घर आया तो बहुत खुश था। उसकी तरक्की हो गयी थी और साथ मे उसका लखनऊ ट्रान्सफर हो गया लखनऊ ट्रान्सफर से भी बहुत खुश था। यह शहर उसे हमेशा से बहुत पसन्द था। इस खबर से रश्मी भी बहुत खुश हुई लेकिन वह सोचने लगी कि महमूद का क्या होगा। कहीं टिल्लू उसे स्कूल से निकाल ना ले। पढ़ना लिखना शायद वो अपने बच्चे का मुकद्दर नही समझता था। कि तरक्की की मेराज यही कि कोई काम सीखकर किसी दुकान पर काम कर ले ~~ज्यादा~~ या बहुत तरक्की कर ली तो ड्राइवर बन गए। इससे आगे वह सोच नही पाता था।

रश्मी को अपने पति और सूरज के साथ गए कई साल गुज़र गए थे। जाने से पहले उसने टिल्लू को बहुत समझाया था कि महमूद को पढ़ाई को ना छुड़ाए महमूद ज़हीन बच्चा है और बहुत तरक्की करेगा। महमूद के अब्बा ने भी बहुत देर तक गर्दन हिलाकर हामी भरी थी कि वह महमूद को पढ़ाएगा।

— x —

बेटा आज तू इतना बड़ा पुलिस अफसर बन गया है। आज मुझे तुम्हारी मां बहुत याद आ रही है। वो तुझे इस पुलिस की वर्दी मे देखकर कितना खुश होती कि मेरा बेटा थानेदार बन गया है। अब्बा मैं थानेदार नहीं हूं ~~मैं थानेदार नहीं हूं~~ मैं आई पी एस अफसर हूं डिपटी सुप्रीटेन्डेट पुलिस। महमूद ने अपने अब्बा यानिकि टिल्लू को समझाने की कोशिश की अच्छा बेटा डिपटी ही सही। बेटा मेरा दिल चाह रहा है कि तुझे ले जाकर रश्मी मैडम से मिलवाऊं, जो तुझे बचपन मे पढ़ाती थी और जिनके समझाने से मैं तुझे पढ़ाने के लिए राज़ी हो गया था। और उन्होंने तुझे पोलियो जैसी खतरनाक बीमारी का शिकार होने से बचाया। बेटा, उनका कितना बड़ा एहसान हमदोनों पर है। जी हां अब्बा आप मुझसे यह सब कई बार बता चुके हैं। आज मैं जो भी हूं उन्ही की वजह से हूं। वह तो बिलकुल मेरी मां की तरह है मेरा भी दिल चाहता है कि उनसे मिलू लेकिन कैसे? चलो बेटा डाक्टर पाण्डे के पास चलते हैं उन्होंने ही बचपन मे तेरा पोलियो का इलाज किया है। वह उन लोगों के दोस्त भी थे वह ज़रूर जानते होंगे कि रश्मी मैडम लखनऊ मे कहां रहती है।

— x —

डा० पाण्डे ने बताया कि रश्मी के ~~हसबैन्ड~~ पति का चार

साल पहले इन्तेकाल हो गया उनका लड़का सूरज अमरीका चला गया था वह वहीं रहता है अपनी माँ को उसने लखनऊ के एक एलडर्ली होम मे डाल दिया है। महमूद को यह सब सुनकर बहुत अफसोस वह उसी दिन लखनऊ, रश्मी से मिलने चला गया। एलडर्ली होम का पता डाक्टर पाण्डे ने बता दिया था। एलडर्ली होम की नर्स ने उसे रश्मी के कमरे तक पहुंचा दिया था। छोटा सा साफ सुथरा सा कमरा था कोने पर बेड था उसके पास कुर्सी मेज थी। रश्मी कुर्सी पर बैठी थी। मेज पर कुछ फोटो पड़े हुए थे और रश्मी उनकी तरफ देख रही थी। महमूद रश्मी के पास जाकर खड़ा हो गया और धीरे से उसे पुकारा माता जी! रश्मी ने पलटकर महमूद की तरफ देखा अजीब खाली खाली आंखों से जैसे वह उसे पहचानने की कोशिश कर रही हो। महमूद पुलिस के यूनिफार्म मे था माता जी मै महमूद हूँ, वही छोटा सा महमूद जिसको आपने पढ़ना सिखाया था और स्कूल मे दाखिला कराया जो आपके बेटे सूरज के साथ खेलता था। रश्मी महमूद को बहुत देर तक देखती रही और जैसे उसको सब याद आ गया। उसकी आंखों की उदासी एक दम गायब हो गयी। तू महमूद है इतना बड़ा अफसर बन गया। सूरज कहा है माता जी महमूद ने उससे पूछा। उसे मालूम था कि सूरज अमरीका मे है लेकिन उसने अनजान बनकर पूछा। बेटा वह अमरिका मे रहता है देखो फोटो भेजता है खत लिखता है और कभी कभी फोन भी करता है। उसने खत और फोटो दोनो महमूद की तरफ बढ़ा दिये थे। महमूद ने सूरज की फोटो की तरफ देखा फिर खत पर नजर डाली। डाक की

~~उस~~ ~~की~~ मुहर पर छ: महीने पहले की तारीख थी। महमूद वहीं बेड पर रशमी के पास बैठ गया था उसने रशमी से खूब बातें करीं। अपनी पढ़ाई की अपने आई पी एस के इम्तेहान में आने की। और इस तरह की हल्की फुल्की बात। फिर वो वहाँ से आ गया उसने बताया की उसका भी लखनऊ ट्रान्सफ़र होने वाला है फिर वह रशमी से रोज मिलने आएगा। रशमी बोली थी हाँ बेटा मुझे तेरा इन्तेज़ार रहेगा शायद बरसों बाद किसी ने उससे इतनी देर बात की थी। महमूद चला गया था और रशमी उसके बारे में सोचती रही। वह बच्चा उसकी आँखों ~~[illegible]~~ के सामने घूमने लगा। पाँच साल का बच्चा जो सूरज की किताबों को पलट पलट कर देखता था तो उसकी आँखों में एक चमक सी आ जाती थी। कभी होटल की बेंच रगड़ रगड़ कर साफ कर रहा है कभी प्यालियाँ धो रहा है। और उसकी जरा सी तवज्जह से आज इतना बड़ा पुलिस अफसर बन गया है। इस तरह से कभी उससे दो बारा मिलना हो जाएगा उसने कभी सोचा भी नहीं था। ~~महमूद को~~ उससे बात करके उसे बहुत अच्छा लगा शायद आज वो सालों बाद हँसी भी थी। महमूद को गए हुए तीन चार महीने हो गए थे वह उससे मिलने नहीं आया वह रोज महमूद का इन्तेज़ार करती थी। और सोचती थी हो सकता है वह सरकारी कामों में इतना मशगूल हो कि उसको आने की फुर्सत न मिल रही हो। जब उसका अपना बेटा ही चार पाँच साल से गायब है महीनों फोन नहीं करता। हालांकि उसके पास खाने पीने की कोई कमी नहीं एलडेली होम को खर्चा वह पाबन्दी से भेजता था। लेकिन पैसा सब कुछ तो नहीं होता उसका अपना

BLUE STAR

बेटा चाहिये था जिसके साथ वह रहे।

—x—

आज उसकी तबियत ठीक नहीं थी उसे बुखार भी था। उसको डाक्टर ने देखा था और दवा भी दी थी। यह एलडर्ली होम का डाक्टर भी था जो ज़रूरत पड़ने पर वहां लोगो को देखने के लिए आ जाता था। वह बिस्तर पर लेटी थी और कभी कभी तकिए के नीचे से सूरज की तस्वीर निकाल कर देख लेती थी। वही तस्वीर जो पिछले पांच साल से रखे थी एक हल्की सी उम्मीद के साथ कि कभी सूरज उसमे से निकलकर उसके सामने आकर खड़ा हो जाए। वह इसी तसव्वुर के साथ आंखे बन्द किए लेटी थी कि उसे लगा कि उसे कोई पुकार रहा है। उसने आंखे खोली तो महमूद सामने खड़ा था। आज वह पूरे छः महीने बाद आया था। महमूद ने उसे बताया कि वह बहुत परेशानी मे पड़ गया था इस लिए इतने दिन नहीं आ पाया था। ~~उसने बताया कि~~ उसके अब्बू बहुत बीमार पड़ गए थे वह डाक्टर और अस्पताल इन्ही सब चीजो मे लगा रहा। अब कैसे है तुम्हारे पिता जी रश्मी उससे पूछ रही थी। जी वो अब नहीं रहे मेरी मां की तरह उन्हे भी कैंसर था। महमूद वहां कुर्सी पर रश्मी के सामने बैठ गया। था उसकी आंखे आंसू से डबडबा आयी थी। रश्मी उसको बहुत देर तक समझाती रही। महमूद ने उसे बताया कि उसका ट्रांसफर लखनऊ हो गया है अभी वह होटल मे ठहरा हुआ उसे प्यार भी एलार्ट हो गया है। दो तीन मे शिफ्ट हो जाएगा।

—x—

महमूद अपने घर शिफ्ट हो गया था। आज वह रश्मी को अपना घर दिखाने लाया था बड़ा सा घर, जिसमें वह अकेला रहता था हालांकि काम करने वाले कई थे और खाना पकाने के लिए बावर्ची भी था। रश्मी दिन भर उसके घर में रही। बावर्ची ने रश्मी के लिए तरह तरह के खाने बनाए थे। रश्मी के लिए यह बहुत अच्छा चेंज था। काफी दिनों बाद वह इस तरह बाहर निकली थी। चलो बेटा अब मुझे वापस मेरे ठिकाने पर छोड़ दो। महमूद ने रश्मी को एल्डर्ली होम वापस पहुंचा दिया था।

अब महमूद रोज़ रश्मी से ~~मिलने~~ एलडरली होम जाने लगा और एक दिन वह ~~महमूद~~ बहुत मिन्नत समाजत करके रश्मी को अपने घर ले आया था। अब वह महमूद के साथ रहती थी। वह यहां आने के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी लेकिन महमूद की जिद के सामने बेबस हो गयी। महमूद ने उससे कहा उसका दुनिया में अब कोई नहीं ~~अब~~ है सिर्फ वही है जो उसको मां से भी बढ़कर है। आज वह जो भी है उसकी वजह से है। अब वह उसे भी मौका दे कि वह उसकी खिदमत कर सके। महमूद ने एल्डर्ली होम से उसका सूरज का पता और फोन नम्बर ले लिया। अब अकसर व बेशतर वह सूरज से बात कर लिया करता था और रश्मी से भी बात कराता था। रश्मी इस बात से भी बेइन्तहा खुश थी कि सूरज जो उससे इतनी दूर चला गया था अब धीरे धीरे करीब आ रहा है।

—x—

आज महमूद जब सूरज से फोन पर बात कर

रहा था तो सूरज ने उससे कहा कि वह उसका बहुत शुक्रगुज़ार है और एहसानमन्द भी कि वह उसकी माँ का इतना ख़्याल रख रहा है और वह उन्हें अपने घर में रखे हुए भी है। महमूद ने उसको जवाब दिया नहीं मैं उन्हें अपने घर में नहीं रखे हूं बल्कि मैं उनके साथ रह रहा हूं। एहसानमन्द तो मैं तुम्हारा भी कि बचपन में तुमने मुझे दोस्त बनाया मुझे किताबें दी, और तो और आज तुम्हारी माँ मेरी भी माँ है। वो अब मेरा सहारा है। उनसे मैं बात करता हूं तो मुझे बहुत सुकून मिलता है। कदम कदम पर वो मेरी रहनुमाई करती है। मुझे मशवरे देती है। ~~कभी मैं मुजरिमों को गिरफ्तार करता हूं और अक्सर लोग पावर और पैसे के बल पर उन्हें छुड़वा लेते हैं~~ कभी कभी जब मैं बहुत खतरनाक मुजरिमों से निपटता हूं तो घबरा भी जाता हूं तो वो मेरी हिम्मत बन्धाती है। आज जब माँ मेरे साथ, तो मैं अपने को बहुत मजबूत महसूस करता हूं। महमूद बहुत देर तक सूरज से बात करता ~~रहा उसे लगा सूरज उससे ज़्यादा~~ फिर उसने फोन रख दिया।

— x —

यह तू किससे इतनी देर तक बात कर रहा था बड़ा खुश लग रहा था रशमी ने महमूद से पूछा। मैं सूरज से बात कर रहा था। क्या कह रहा था वह उसने आज मुझसे बात नहीं की। वह कह रहा था, माँ कि उसे आपकी बहुत याद आती है। वहाँ वह बहुत अकेला उसे भी आपके सहारे की ज़रूरत है। वह आपके पास वापस आ रहा है।